कब एहसास बोलते हैं

डॉ. आराधना श्रीवास्तव

Copyright © 2026, डॉ. आराधना श्रीवास्तव
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing,
GJ Complex, Thadikara Swamy Koil St, Alandur,
Chennai, Tamil Nadu 600016

ISBN: 978-1-5457-6585-2
eISBN: 978-1-5457-6586-9

Library of Congress Cataloging in Publication

किताबों में अक्सर...
किताबी बातें छोड़,
कुछ जज़्बात भी जुड़े होते हैं...
किसी के हाथ की ख़ुशबू से...
किसी के दिल की बात के
आधे सिरे, आधे से टुकड़े होते हैं...
किताबों के आख़िरी पन्ने खोलकर पढ़ना कभी...
वहीं अक्सर
कई राज़ दबे होते हैं...

उम्मीद की भी क़द्र तब ही होती है......
जब कोई क़द्रदान मिले...
शिकायत किसकी करें...
हाल की फ़िक्र करने वाले भी...
अब गुमशुदा हुए...

मोहब्बत से रुमानियत को जुदा कर दो...
तो बचता क्या है...
तेरे ख़यालों का तसव्वुर ही न हो तो...
तो लिखूँ क्या मैं...
शायरी कहाँ है.....

एक तेरी याद, जो आती है...
एक तेरे आने से पहले,
एक तेरे जाने के बाद...

मैं सोचती थी तुम मुझे भूल चुके हो...
मैं ही तुम्हें बेफ़िज़ूल ही अपनी याद दिलाती हूँ...
थी क्या ख़बर कि तुम अपने ज़ेहन में
मेरी यादों के सूखे फूल सँभाले रहते हो...
कुछ वक़्त साथ बिताने से पहले...
और कुछ वक़्त साथ बिताने के बाद...

लोग एक-दूसरे से मिलकर
बातें हज़ार करते हैं...
हमने तुमसे मिलकर
अक्सर ख़ुद को ख़ामोश होते ज़्यादा देखा है...
जब तुम सब समझ ही लेते हो...
तो कुछ भी कह देने में क्या रखा है...

तेरे इश्क़ के मुक़ाबले मेरा ज़्यादा गहरा था
इस बात में मेरा गुरूर नहीं है शामिल...
जाने कितने ही सालों की तन्हाइयाँ और ख़ामोशी...
और मेरी कितनी छोटी-छोटी अधूरी
ख़्वाहिशों का है ये मुस्तक़बिल...

इसे कोई शिकवा मत समझना...
कई बार अकेले भी इंसान बहक जाता है...
जो पूरा न हो सका...
वही ख़्वाब अक्सर ज़्यादा याद आता है...

तुमसे लिखने को कहना पड़ता है...
लगता है जैसे तुम्हारी क़लम किसी ने चुरा ली हो.....
अपने आप तो तुम कभी लिखते नहीं अब.....
बोलो ना, लिखने के लिए क्या रोज़गारी दूँ...

वक़्त को वक़्त के ऊपर छोड़ दो...
जो राह साथ न दे सके, उस राह से मुँह मोड़ लो...
गुज़रती ज़िंदगी के साथ शायद बहुत कुछ बदल जाए...
और तुम्हें अपने ही दिल के सारे टूटे हिस्से मिल जाएँ...
तुम बस अपने आप की ख़ातिर उन सभी को जोड़ लो...

तुम्हें पता है मैं अच्छा लिखती हूँ
तुम्हें ये भी पता है, कैसे इतना अच्छा लिखती हूँ
सब कुछ तो तुम्हें पता ही है...
अब शायद कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं...
हाँ, अब शायद मैं तुम्हें नज़र आना छोड़ दूँ

हम वहाँ से चले थे, जहाँ वो रुके थे...
हम वहाँ से मुड़े थे,
जहाँ वो मुड़े थे...
पर देख न सके दोनों...
कि रास्ते दोनों के जुदा थे...

हर कोई अपनी गलती नहीं मानता है ए दोस्त ....
कुछ तो गुनाह करके भी मुकर जाते हैं...
फिर तुम क्यों अपना वक्त जाया करते हो....
इस दुनिया में पल भर में चेहरे बदल जाते हैं....

सभी के पास पुख्ता वजह थी....
हम क़त्ल करने की....
अफ़सोस हम मरने के लिए....
एक ठोस वजह ढूंढ ना पाये....

क्यों मोहब्बत से ख़फ़ा होते हो....
ये तुम्हारा क्या बिगाड़ती है...
कुछ भी तो नहीं माँगती....
बस तेरी हर एक बात पर....
सौ सौ दफ़ा निसार होती है...

जो भी माँगो आज, सब कुछ क़ुबूल करे...
जन्नत मिले यहीं पे ही तुम्हें...
कहीं और जाने की ज़रूरत न पड़े...

सोचती हूँ...
हो गई होती हमसे भी मोहब्बत
तो वो कैसी-सी होती...
बारिश में एक ही प्याली से
बाँटी हुई चाय-सी होती...
छत पर साथ खामोश
काटी साँझ-सी होती...
वो किसी अधूरे इंतज़ार-सी न होती...
वो एक मुकम्मल बहार-सी होती...
उसे ख़ुद के होने का एहसास दिलाने की ज़रूरत न होती...
वो किसी ठहरे हुए दर्द की सूरत न होती...
वो मुझसे मुझी को माँग लेती...
मैं चाहे कुछ भी कह देती...
वो मेरे एहसास जान लेती...
वो मुझसे मेरा दर्द जुदा कर
मुझे हँसा देती...
मैं अगर चुप भी हो जाती...
वो मुझे बेवजह ही आवाज़ लगा लेती...
कुछ ऐसी-सी मोहब्बत...
जो मुझे अपना समझकर
बस मेरे साथ ठहर जाती...

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com